ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 11 अंक 50 | 14 से 20 अप्रैल, 2016 | दयानन्दाब्द 193 | सृष्टि सम्वत् 1960853116 | सम्वत् 2073 | चै. शु. 07

सार्वदेशिक सभा का दो दिवसीय साधारण अधिवेशन

हरिद्वार कुम्भ मेले के अवसर पर आयोजित वेद प्रचार शिविर स्थल पर सफलता पूर्वक सम्पन्न

गौहत्या, नशाखोरी एवं पाखण्ड के विरुद्ध राष्ट्रीय स्तर पर प्रचण्ड अभियान चलाने की बनी योजना

आर्य समाज को तेजस्वी स्वरूप प्रदान करने की महती आवश्यकता

– स्वामी आर्यवेश

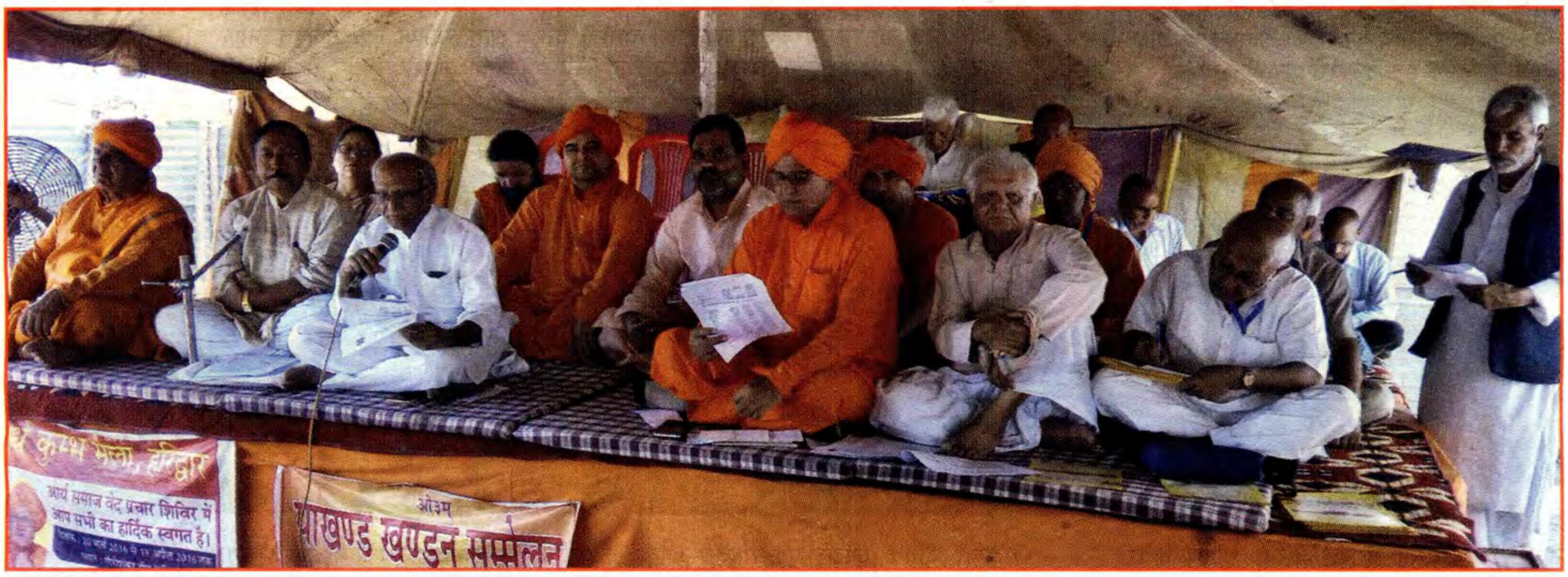

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का दो दिवसीय साधारण अधिवेशन दिनांक 9 से 10 अप्रैल, 2016 को हरिद्वार कुम्भ मेले में सार्वदेशिक सभा द्वारा चलाये जा रहे शिविर स्थल पर उत्साहपूर्ण वातावरण में सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गया। अधिवेशन की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा संचालन सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने किया। इस अवसर पर देश के विभिन्न प्रान्तों से भारी संख्या में आये प्रतिनिधि उपस्थित थे। अधिवेशन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी, मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य, कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी, उपप्रधान श्रीमती इन्दुबाला, हरिद्वार के स्थानीय विधयक एवं प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी यतीश्वरानन्द जी, स्वामी कमलानन्द जी, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के प्रधान श्री गोविन्द सिंह भण्डारी के अतिरिक्त सभा की अन्तरंग के प्रमुख सदस्य श्री विरजानन्द एडवोकेट महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, डॉ. लक्ष्मण दास प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत, श्री रामानन्द आर्य (पटना), आचार्य सन्तराम आर्य, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा बहन पूनम आर्या एवं संयोजक बहन प्रवेश आर्या, श्री रमाकान्त सारस्वत आदि ने अपने विचार रखे। इनके अतिरिक्त छत्तीसगढ़ से श्री कमल नारायण, मध्य प्रदेश विदर्भ के मंत्री श्री जय नारायण आर्य, मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री केशव सिंह तोमर, उत्तराखण्ड के मंत्री श्री दयाकृष्ण काण्डपाल, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा, श्री दामोदर जी पटना आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर मुख्य तीन बिन्दुओं पर सहमति बनाकर सभा ने राष्ट्रीय स्तर पर विशाल जन–जागरण अभियान चलाकर प्रचण्ड आन्दोलन चलाने का निश्चय किया। इसके अन्तर्गत सभी प्रान्तों में सांकेतिक धरने प्रदर्शन, जन–जागरण अभियान तथा अन्य कार्यक्रम करने की योजना बनाई गई। कार्यक्रम की सफलता के लिए सभी प्रान्तीय सभाओं की समीक्षा की गई तथा प्रान्तीय सभाओं को सुदृढ़ बनाने की भी योजना बनाई गई। सभा अधिकारी प्रान्तीय सभाओं में जाकर हर सम्भावित स्थिति पर विचार विमर्श करेंगे तथा जमीनी स्तर पर योजना बनायेंगे।

इस अवसर पर विभिन्न आर्य नेताओं ने अपने विचार प्रकट करते हुए गौहत्या, नशाखोरी, महिला उत्पीड़न, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, आर्य लोग भारत के मूल निवासी, अन्धविश्वास, पाखण्ड आदि विषयों पर प्रस्ताव प्रस्तुत किये। सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया कि गौहत्या, नशाखोरी तथा धार्मिक पाखण्ड के विरुद्ध प्रचण्ड आन्दोलन चलाने के लिए सभी प्रान्तीय सभाओं से सम्पर्क बनाकर सभा अधिकारी पृष्ठभूमि तैयार करेंगे। निश्चय किया गया कि आगामी एक वर्ष में एक हजार नई आर्य समाजों का गठन किया जायेगा तथा अधिकाधिक युवाओं और महिलाओं को आर्य समाज का सदस्य बनाने का अभियान चलाया जायेगा।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने घोषणा की कि सार्वदेशिक सभा महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती जो 2024 में आ रही है को

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाने की तैयारी में जुट गई है। उन्होंने कहा कि महर्षि जन्म की दूसरी शताब्दी के अवसर पर एक ठोस योजना का क्रियान्वयन होगा जिससे आर्य समाज पूरे विश्व में एक विशेष पहचान पा सकेगा। उन्होंने कहा कि इस दौरान कोशिश की जायेगी कि 200 संन्यासी, 200 वानप्रस्थी तथा 200 नैष्ठिक ब्रह्मचारी दीक्षित किये जायें। स्वामी जी ने बताया कि समारोह की सफलता के लिए कार्य विभाजन की दृष्टि से विभिन्न प्रकल्प खड़े किये जायेंगे तथा इण्टरनेट तथा अन्य इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से आर्य समाज की समस्त गतिविधियों के अतिरिक्त सम्पूर्ण वैदिक वांङ्मय का प्रस्तुतिकरण किया जायेगा। इस ऐतिहासिक कार्यक्रम की तैयारी के लिए विभिन्न उपसमितियों का गठन करके उन्हें कार्य का दायित्व सौंपा जायेगा।

स्वामी जी ने आर्य समाज के संगठन को जमीनी स्तर पर प्रभावशाली बनाने के लिए आर्य समाज की कार्यशैली में विशेष संशोधन पर बल दिया और कहा कि आर्य समाजों को उपयोगी आर्य समाज बनाना वर्तमान की विशेष आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि जिस मोहल्ले, ग्राम, नगर में आर्य समाज है वहाँ पर रहने वाले लोगों के दिल–दिमाग पर यह प्रभाव होना चाहिए कि आर्य समाज उनके लिए एक अत्यन्त उपयोगी समाज है। विशेष पर्वों, महापुरुषों की जयन्ती व पुण्यतिथियों, नव–सम्वतसर आदि को विशेष उत्साह के साथ मनाया जाना चाहिए। इन अवसरों पर जुलूस आदि निकाल

ने पुरुष तथा युवतियों के शिविर लगाने पर विशेष बल दिया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आर्य समाज का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल है। उन्होंने कहा कि महर्षि के अप्रतिम बलिदान से प्रेरणा लेकर अपने–अपने कार्य में जुट जाना चाहिए और परोपकार, सेवा, सहयोग को अपने कार्यों का आधार बनाकर चलना चाहिए।

सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए विशेष रूप से गौहत्या, नशाखोरी, पाखण्ड पर गवेशणापूर्वक चर्चा प्रारम्भ करते हुए आह्वान किया कि अब समय आ गया है कि आर्य समाज को इन मुददों पर अपनी स्पष्ट दिशा बनानी होगी। उन्होंने कहा कि गौहत्या मात्र एक धार्मिक भावनाओं को आहत करने वाला विषय नहीं है, अपितु गौहत्या भारत की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को चुनौती देने वाला कृत्य है। इसी प्रकार नशाखोरी एवं धार्मिक पाखण्ड

महर्षि दयानन्द की बात नहीं मानी यदि महर्षि की बात मान लेते तो जो दशा आज है वह नहीं होगी। उन्होंने कहा कि आज किसान आत्म हत्या कर रहा है, महिलाओं पर अत्याचार हो रहे हैं, आज की शिक्षा नौजवानों के चरित्र को बिगाड़ रही है। ऐसी परिस्थिति में आर्य समाज के सिवाय कहीं भी आशा की किरण दिखाई नहीं देती। आज आर्य समाज को युवाओं की जरूरत है। युवा आगे आयें और बलिदान का रास्ता अपनाकर देश को पतन के गर्त में जाने से बचायें। उन्होंने कहा कि अन्याय, शोषण, गरीबी, बेरोजगारी महिला उत्पीड़न, नशाखोरी, बलात्कार, अपहरण के विरुद्ध युवाओं को प्रेरित करने की आवश्यकता है और यह कार्य स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में आर्य समाज कर रहा है। उन्होंने कहा कि आज आर्य समाज एक मजबूत लोक शक्ति खड़ी करने की दिशा में कदम बढ़ा चुका है और मुझे आशा है कि पूरा

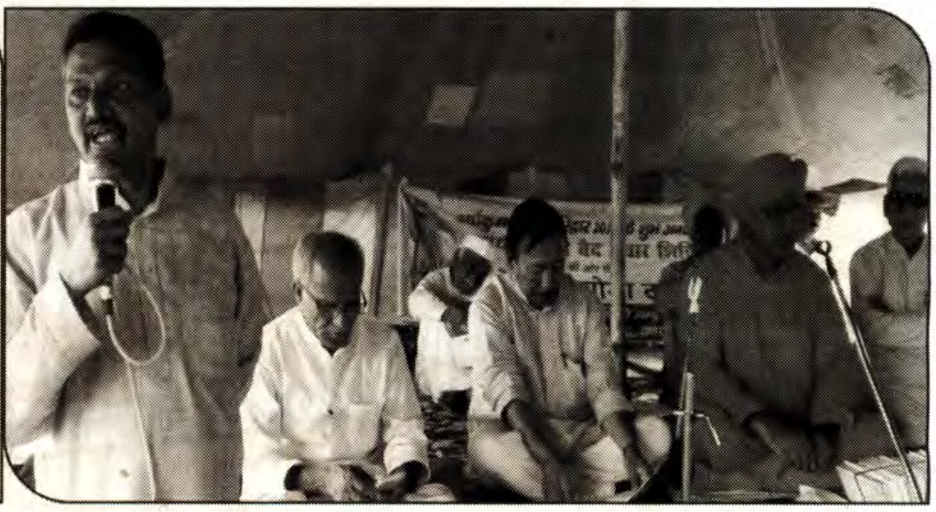

कर,गरीब बस्तियों में यज्ञ करके, भाषण प्रतियोगिता, योगासन प्रतियोगिता, लेख प्रतियोगिता तथा अन्य आकर्षक कार्यक्रम आयोजित करके आर्य गतिविधियों में सक्रियता लानी चाहिए।अत्यन्त आवश्यक है कि अपने द्वारा किये गये कार्यक्रमों की सूचना समाचार पत्रों, टी. वी. आदि पर अवश्य देनी चाहिए। कभी–कभी अन्य संगठनों के साथ मिलकर ज्वलन्त मुद्दों पर सामूहिक कार्यक्रम भी आयोजित किये जाने चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज को सातों दिन सक्रिय रखना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए आर्य समाजों में योग कक्षा चलाना, टयूशन की निःशुल्क कक्षायें चलाना, प्रातः सायं संन्ध्या की व्यवस्था करना तथा सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए कार्य करना आदि से आर्य समाज में सक्रियता लाई जा सकती है। स्वामी जी

भी हमारे दैनिक जीवन एवं राष्ट्रीय जीवन को सीधे प्रभावित करते हैं। प्रो. साहब ने कहा कि हमें अपने कार्यों को बढ़ाकर लम्बी लाइन खींचनी चाहिए किसी की आलोचना के बदले हम कार्य करके ही सही दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य को महर्षि के स्वप्न को पूरा करने के लिए मनसा वाचा कर्मणा आगे बढ़ना होगा तथा सामाजिक बुराइयों को जड़ मूल से उखाड़ फेंकने के लिए संकल्प लेना होगा।

सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी ने अपने जोशीले वक्तव्य से अधिवेशन को जोश तथा उत्साह से भर दिया। उन्होंने देश की वर्तमान परिस्थितियों पर अपना ओजस्वी भाषणदेते हुए कहा कि आज देश विनाश के कगार पर खड़ा है, क्योंकि हमने

राष्ट्र आर्य समाज के साथ जुड़ेगा।

10 अप्रैल को प्रातः विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जो हरिद्वार के मुख्य मार्गो तथा बाजारों से होती हुई शिविर स्थल पर समाप्त हुई। इस एक किलोमीटर लम्बी शोभा यात्रा में हजारों व्यक्तियों के अतिरिक्त विभिन्न प्रदेशों की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सभासद व प्रतिनिधि व गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। सारे रास्ते में अत्यन्त जोश के साथ नारे लगाये जा रहे थे तथा सारा वातावरण ऋषिमय हो चला था। शोभायात्रा पांच किलोमीटर का रास्ता तय करके जयघोष करते हुए शिविर स्थल पर पहुंची जहाँ खुला अधिवेशन आयोजित किया गया था। 10 तारीख को शाम पांच बजे विधिवत अधिवेशन उत्साह पूर्ण वातावरण में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

13 अप्रैल पर विशेष

अमृतसर की खूनी बैसाखी से क्षुब्ध हुए
अमर शहीदों का बलिदान

– रामबिहारी विश्वकर्मा

अंग्रेज हमारे देश में व्यापारी के रूप में आये और भारत की जनता ने 'अतिथि देवो भव' की परम्परा के अनुसार इन व्यापारियों को सब प्रकार की सुविधाएं दीं। लेकिन धीरे-धीरे इन व्यापारियों ने देश में फूट डालकर उसके टुकड़े-टुकड़े करके अपना कब्जा जमा लिया। 1857 में भारतीय सिपाहियों ने पहली बार विद्रोह करके भारत माँ को विदेशी दासता से मुक्ति दिलाने का प्रयास किया लेकिन वे विफल रहे। महाराष्ट्र में वासुदेव बलवन्त फड़के ने 1873 में युवा समाज का संगठन शुरू किया। जगह-जगह व्यायामशालाएं खोलीं। इस क्रान्तिकारी को राजद्रोह के आरोप में आजीवन कारावास की सजा दी गई लेकिन युवकों ने खासतौर पर गरमपंथी विचारधारा वाले युवकों ने यह निश्चय कर लिया कि इस देश को आजादी भीख मांगने से नहीं मिलेगी। उनका दृढ़ विचार था कि स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे हम लेकर रहेंगे।

भारत में अंग्रेजों ने तथाकथित शासन सुधार लाने के लिए लार्ड साइमन की अध्यक्षता में एक कमीशन नियुक्त किया था। यह कमीशन 3 फरवरी, 1928 को जब भारत पहुंचा तो पूरे देश में हड़ताल रखी गई। और जगह-जगह "साईमन गो बैक" के नारे लगाये गये। लाहौर में नौजवान भारत सभा के सदस्यों ने भी नारे लगाने की योजना बनाई। तत्कालीन पुलिस अधीक्षक स्काट ने असिस्टेंट सान्डर्स को रास्ता साफ करने की जिम्मेदारी सौंपी। लाहौर में लाला लाजपतराय और नौजवानों की टोली पर सान्डर्स ने लाठी बरसायी। लाला लाजपतराय को इतनी चोट लगी कि कुछ दिनों पश्चात् चोट के कारण उनकी मृत्यु हो गई। भगतसिंह ने इस दुखद घटना पर प्रस्ताव रखा कि लाला जी पर जो लाठियां बरसाई गयी हैं। उसी के कारण उनकी मृत्यु हुई है। इससे समूचे राष्ट्र का अपमान हुआ है। और नौजवान भारत सभा इस अपमान का बदला लेकर रहेगी। उन्होंने लाठी चलाने वाले पुलिस सुपरिटेंडेंट स्काट को गोली का निशाना बनाने का निश्चय किया। लाला लाजपतराय की मृत्यु के एक महीने के बाद चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरू और जयगोपाल ने पुलिस स्टेशन के सामने सान्डर्स को गोलियों से भून डाला। वे मारना तो चाहते थे स्काट को जिसने सान्डर्स को लाठी चार्ज का आदेश दिया था। लेकिन दोनों का आकार-प्रकार ऐसा था कि पहचानने में कुछ भूल हो गई और भ्रमवश उन्होंने सान्डर्स को मार डाला। इस तरह उन्होंने लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला ले लिया। इन जवानों ने भारत माँ की बेड़ियां काटने के लिए अपने पैरों में बेड़ियाँ डाल लीं।

23 वर्ष की उम्र में भगत सिंह एक युगपुरुष बन गये थे। अपने खून से उन्होंने स्वतन्त्रता के जिस पौध कोसींचा वह विशाल वृक्ष बन गया। भगत सिंह को वीरता का यह सबक पुश्तैनी तौर पर प्राप्त हुआ था। एक बार जब वे छोटे थे और छोटे-छोटे तिनके जमीन में गाड़ रहे थे तो उनके पिता सरदार किशन सिंह ने पूछा कि बेटे तुम क्या कर रहे हो तो तुतलाती आवाज में भगत सिंह ने कहा कि बुबुकें बो रहा हूँ। यानि बंदूके बो रहा हूँ। उनका परिवार पिछली दो पीढ़ियों से विदेशी सरकार के खिलाफ संघर्ष कर रहा था। ऐसे परिवार में भगतसिंह जैसे क्रान्तिकारी विचारों वाले बालक का जन्म लेना स्वाभाविक ही था। भगत सिंह 10-11 साल की उम्र में ही बहुत ही चिन्तनशील हो गये थे। वह धर्म के गहन विषयों की आलोचना करने में सक्षम हो गये थे। 1919 में 13 अप्रैल को बैसाखी के दिन अमृसर क जलियांवाला बाग में एक सभा में करीब 20 हजार स्त्री-पुरुष, बच्चे इकट्ठे हुए थे। इसी बीच लैफ्टिनेंट सर ओडायर ने 100 हिन्दुस्तानी और 40 अंग्रेज सिपाहियों के साथ वहां प्रवेश किया। करीब 16 सौ राउण्ड फायर किये गये, जलियांवाला बाग में लाशें पट गईं। उस समय भगतसिंह 12 वर्ष के थे। वह पढ़ने गये थे, लेकिन वह दृश्य देखकर उन्होंने खून से भीगी मिट्टी उठाई और माथे से लगाकर उसे एक छोटी सी शीशी में भर लिया। घर पहुंचने पर अपनी बहन को वह शीशी दिखाई और शीशी के चारों ओर फूल रखकर सिर झुकाया। 14 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और स्वतंत्रता के आन्दोलन में कूद पड़े। उनके अन्दर अद्भुत संगठन शक्ति तो थी ही, व्यवहार कुशल भीथे। इसी बीच 5 फरवरी 1922 को गोरखपुर के चौरी चौरा स्थान पर लोगों की भीड़ ने थानेदार और सिपाहियों को थाने में बन्द करके आग लगा दी। क्रान्तिकारियों के मन में यह निश्चय हो गया कि अंग्रेजों के कान बहरे हो चुके हैं। वे शान्ति की भाषा सुन नहीं पाते। बहरों को सुनाने के लिए ऊंची आवाज की जरूरत होती है इसीलिए उन्होंने अंग्रेजों का ध्यान आकर्षित करने के लिए और उनके बहरे कानों में सुनाई देने लायक आवाज बुलन्द करने का निश्चय किया। उन्होंने एसेम्बली में बम फेंकने की योजना बनाई। एसेम्बली में 8 अप्रैल 1929 को वायसराय के फैसले की घोषणा की जाने वाली थी। भगतसिंह और बटूकेश्वर दत्त खाकी कमीज और नेकर पहनकर वहां पहुंच गये। उन्होंने अखबार में लिपटा हुआ बम सरकारी बेंचों के पीछे खाली जगह पर फेंक दिया। उसके बाद दूसरा बम भी फेंका। उन्होंने पिस्तौल से दो गोलियां भी छोड़ी। दोनों वहां खड़े रहे और नारा लगाया इन्कलाब जिन्दाबाद दूसरा नारा गूंजा साम्राज्यवाद का नाश हो। उन्होंने एसेम्बली में पर्चे भी फेंके जिस पर अंग्रेजी में लिखा हुआ था, बहरों को सुनाने के लिए ऊँची आवाज की जरूरत होती है। बम फेंकने के बाद भगत सिंह तथा बटूकेश्वर दत्त आसानी से भाग कर बच सकते थे मगर वे शांत चुपचाप खड़े रहे। पुलिस जब उन्हें कोतवाली ले जाने लगी तो उन्होंने फिर नारा लगाया, 'इन्कलाब जिन्दाबाद' दूसरा नारा गूंजा 'साम्राज्यवाद का नाश हो।' भगत सिंह केवल क्रान्तिकारी ही नहीं थे वे अध्ययनशील और दार्शनिक विचारों वाले व्यक्ति थे। उनसे जब न्यायालय में पूछा गया कि क्रान्ति से आपका आशय क्या है तो उन्होंने कहा, क्रान्ति से हमारा प्रयोजन है अन्याय पर आधारित वर्तमान व्यवस्था में परिवर्तन। उन्होंने आगे कहा, पूंजीपति, शोषक और समाज पर घुन की तरह जीने वाले लोग करोड़ों रुपया पानी की तरह बहाते हैं। वहीं दूसरी ओर शानदार महलों का निर्माण करने वाले लोग गन्दी बस्तियों में रहते हैं ऐसा समाज किस काम का? इसे बदलना होगा। भगत सिंह ने न्यायालय के समक्ष नई सामाजिक व्यवस्था की जो रूपरेखा दी वह बड़े-बड़े दार्शनिकों को भी सोचने के लिए बाध्य करती है कि इतनी कम उम्र में इस व्यक्ति ने गहन चिन्तन-मनन का समय भला कब निकाला होगा?

असेम्बली में विस्फोट के मूल में उद्देश्य अपने क्रान्तिकारी विचारों को लोगों तक पहुंचाना था। उनके वक्तव्य उस समय के प्रचलित अखबारों में प्रकाशित हुए, उनकी नई विचार पद्धति के साथ जोशीली भाषा और कष्ट झेलने के लिए आगे बढ़ना यह देखकर सारा देश उनके प्रति आकृष्ट हुआ। उन्होंने कहा था कि हम ये जानते हैं कि पिस्तौल और बम इन्कलाब नहीं लाते। इन्कलाब की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है, हमने बम का धमाका करके यही प्रकट करना चाहा है। हमारे इन्कलाब का अर्थ पूंजीवाद और पूंजीवादी युद्धों के कष्टों को समाप्त करना है। उन्होंने न्यायाधीश के सामने स्पष्ट किया कि अगर बम फेंकने वालों का सही दिमाग न होता तो वे खाली जगहों की बजाय बेंचों पर बम फेंकते, लेकिन उन्होंने सही जगह चुनने की जो हिम्मत दिखाई है, उसके लिए उन्हें ईनाम मिलना चाहिए। 12 जून 1921 को हुए असेम्बली बम कांड के मुकदमें में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को आजीवन कारावास दिया गया। भगत सिंह जेल से ही अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए जनक्रान्ति करते रहे।

लम्बी भूख हड़ताल की। भगतसिंह ने कहा कि हम इस शर्त पर भूख हड़ताल तोड़ेंगे कि हम सबको एक साथ रहने का मौका दिया जाये। जेल अधिकारियों ने उनकी बात मान ली और उन्हें दाल और फुल्का दिया गया। उस समय भी उन्होंने अपनी जिद मनवाई। आजादी के इन दीवानों को देखने के लिए देश भर से लोग पेशी के दिन अदालत में जाते थे और वहां 'वन्देमातरम्' और 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारों से आसमान गूंज उठता था।

लाहौर जेल में ही बटुकेश्वर दत्त, अजय घोष, जितेन्द्र सान्याल, यतीन्द्र नाथ दास भी रखे गये थे। इसी बीच सान्डर्स हत्याकाण्ड का मुकदमा भी 10 जुलाई 1929 से शुरू हुआ। भगत सिंह को हथकड़ी लगाने की जब बात हुई तो उन्होंने कहा कि एक क्रान्तिकारी को पुलिस के सिपाही के साथ हाथ बांध कर ले जाया जाये ये न्याय के खिलाफ है और उन्होंने भूख हड़ताल कर दी। न्यायाधीश जब कुर्सी पर बैठते थे तो चारों ओर नारे और राष्ट्रीय गीत गूंजने लगता था, "सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है। देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है। वक्त आने पर बता देंगे तुझे ऐ आसमां। हम अभी से क्या बताएं क्या हमारे दिल में है"।

जिस समय मृत्यु की भयानक काली छाया मंडरा रही थी, उस समय भी आजादी के इन दीवानों की हंसी और अट्हास गूंजता रहता था। भगत सिंह कई बार ऐसा व्यंग्य छेड़ते थे या कोई ऐसा पेंचीदा सवाल उठा देते थे कि मजिस्ट्रेट भी चकरा जाते थे। मुकदमें की कार्यवाही 3 महीने तक चलती रही और दुनिया भर के मुकदमों के इतिहास में शायद लाहौर षड्यन्त्र केस ही ऐसा है जिसमें फैसला उस दिन सुनाया गया जिस दिन न अभियुक्त अदालत में हाजिर थे, न गवाह और न वकील। अदालत ने खुद आरोप लगाया और खुद ही फैसला दिया। फैसले में भगतसिंह, राजगुरू और सुखदेव को फांसी की सजा सुनाई गई, 7 को कालेपानी की सजा, एक को सात वर्ष की सजा और एक को तीन वर्ष की सजा दी गई। भगत सिंह को मृत्यु से तनिक भी भय न था, उन्हें न तो व्यक्तिगत चिन्ता थी और न कोई दुःख था।

भगतसिंह जेल में अध्ययन करते रहते थे। हर पत्र में वे पुस्तकों को ही मांग करते थे। पुस्तकों के साथ-साथ वह यहां तक लिख देते थे, कि पुस्तकालय के रजिस्टर में उस पुस्तक का कितना नम्बर है। उन्होंने चार्ल्स डिकेन्स, रीड मेम्सबेनी, गोर्की, मार्क्स, उमर खैयाम, आस्कर वाइल्ड, जार्ज बनार्ड शा और लेनिन आदि का गहन अध्ययन किया था। जब वे अपनी कोठरी में इधर से उधर घूमते थे तो कभी-कभी पुस्तकें छोड़कर मधुर स्वर में गा उठते थे, "माँ मेरा रंग दे बसन्ती चोला। इसी रंग में रंग के शिवा ने माँ का बंधन खोला।" उन्हें राष्ट्र और राष्ट्रवासियों की इतनी चिन्ता थी कि उसके सामने अपने कष्टों का कुछ ध्यान ही नहीं था, जेल में ही उन्होंने 'आत्मकथा', मौत के दरवाजे पर, समाजवाद का आदर्श और स्वाधीनता की लड़ाई में पंजाब का पहला उभार जैसी पुस्तकें लिखीं। कुछ पुस्तकें तो छप गई लेकिन कुछ नहीं छप पाई। जेल में जब कोई मिलने आता था तो कभी-कभी वह कहते थे अगर मैं इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा देश के कोने-कोने तक पहुंचा सका तो समझूंगा कि मेरे जीवन का मूल्य मिल गया। उन्होंने जेल से युवकों के नाम सन्देश भेजा था जिसमें अपनी राजनीतिक विचारधारा को स्पष्ट किया था। उन्होंने अपने बारे में कहा था, यह बात प्रसिद्ध की गई है कि मैं आतंकवादी हूँ परन्तु मैं आतंकवादी नहीं हूँ, मैं एक क्रान्तिकारी हूँ जिसके कुछ निश्चित विचार-आदर्श और लम्बा कार्यक्रम है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि हम बम और पिस्तौल से कोई लाभ प्राप्त नहीं कर सकते। हमारा मुख्य लक्ष्य यह है कि मजदूरों और किसानों का संगठन हो।" भगतसिंह के बलिदान का क्षण ज्यों-ज्यों नजदीक आ रहा था, वह प्रसन्नता और उत्सुकता के साथ उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहे थे। अपने छोटे भाई कुलतार सिंह को लिखे पत्र में उन्होंने कहा था- "फिर जन्म लूँ और मातृभूमि की और सेवा कर सकूँ" मृत्यु के प्रति उनकी निर्भीकता को देखकर लगता था कि जैसे वह इन्सान नहीं फरिश्ता है। जब उनसे कहा गया कि आखिरी वक्त अपने वाहे गुरु का नाम ले लो और 'गुरुवाणी' का पाठ कर लो तो भगतसिंह ने कहा, "आखिरी वक्त आ गया है, मैं परमात्मा को याद करूँ तो वह कहेंगे कि यह बुजदिल है, तमाम उम्र तो इसने मुझे याद नहीं किया और मौत सामने नजर आने लगी है तो मुझे याद करने लगा है। लोग यही कहेंगे कि आखिरी वक्त मौत को सामने देखकर इसके पांव लड़खड़ाने लगे।" जब फांसी की सजा दी गई तो भगतसिंह बीच में थे, अगल-बगल सुखदेव और राजगुरु थे। तीनों मिलकर साथ-साथ गाते हुए चलने लगे, दिल से निकलेगी ना मर कर भी वतन की उल्फत, मेरी मिट्टी से भी खुशबुए वतन आयेगी।

भगत सिंह ने मजिस्ट्रेट को देखकर कहा था 'आप बहुत भाग्यशाली हैं कि आपको यह देखने को नसीब हो रहा है कि भारत के क्रान्तिकारी किस तरह खुशी-खुशी अपने उच्च आदर्शों के लिए मौत को गले लगाते हैं।' उनके पैरों पर न कंपकंपी थी, न चेहरे पर घबराहट। फांसी की फंदा पकड़कर उसे चूम कर तीनों ने एक साथ गर्जना की, "इन्कलाब जिन्दाबाद" साम्राज्यवाद मुर्दाबाद। उस समय शाम के सात बजकर 30 मिनट थे। इन तीनों क्रान्तिकारियों को समूचा देश उनकी निर्भीकता और राष्ट्रवाद की अदम्य भावना के लिए सदैव याद रखेगा।

(पूर्व निदेशक, आकाशवाणी केन्द्र, नई दिल्ली)

हरिद्वार अर्धकुम्भ मेला के शिविर में आयोजित 9-10 अप्रैल, 2016 को सार्वदेशिक सभा के अधिवेशन की कुछ चित्रमय झलकियाँ

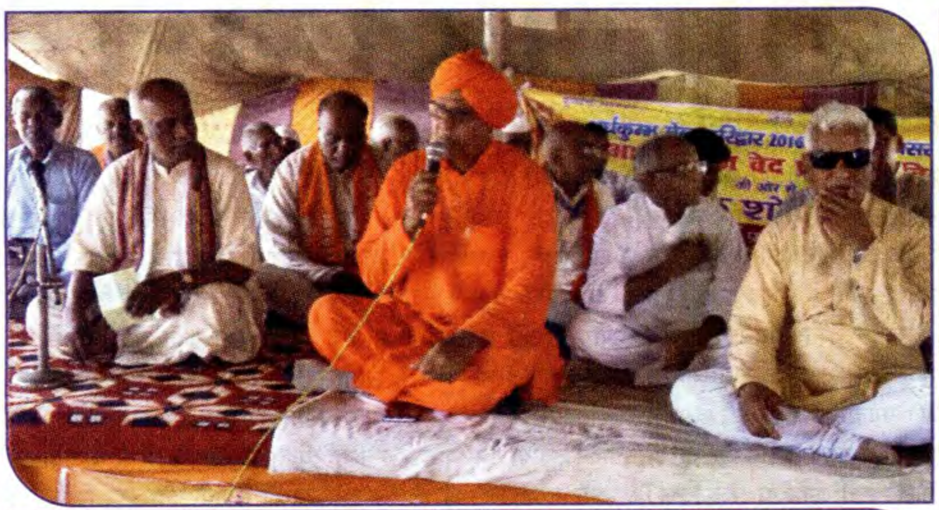
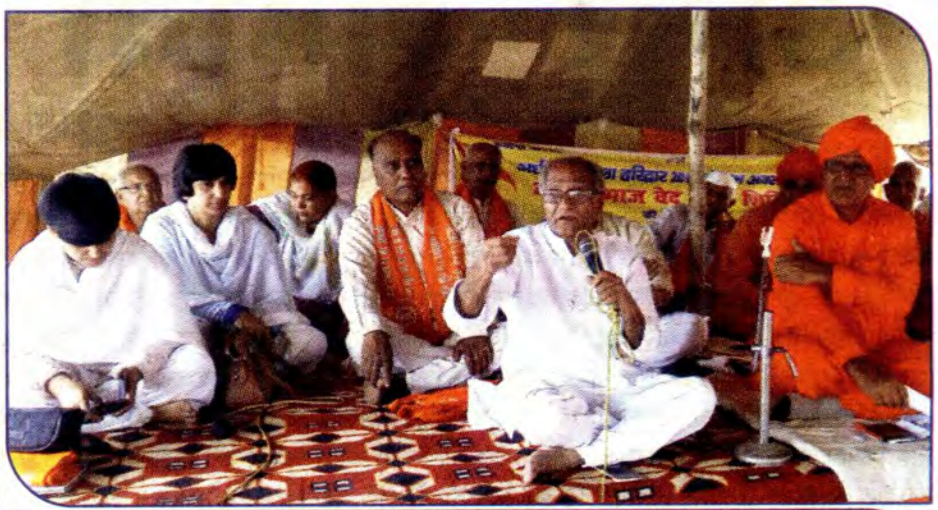
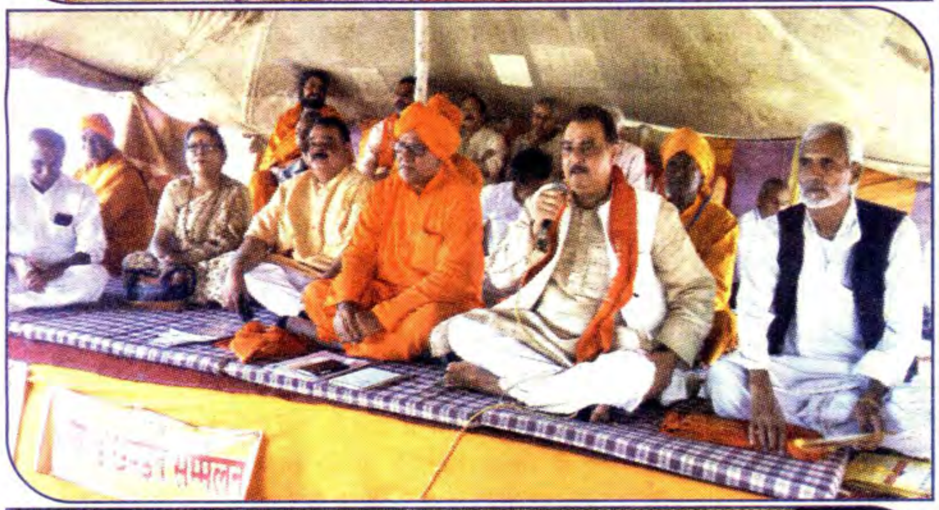
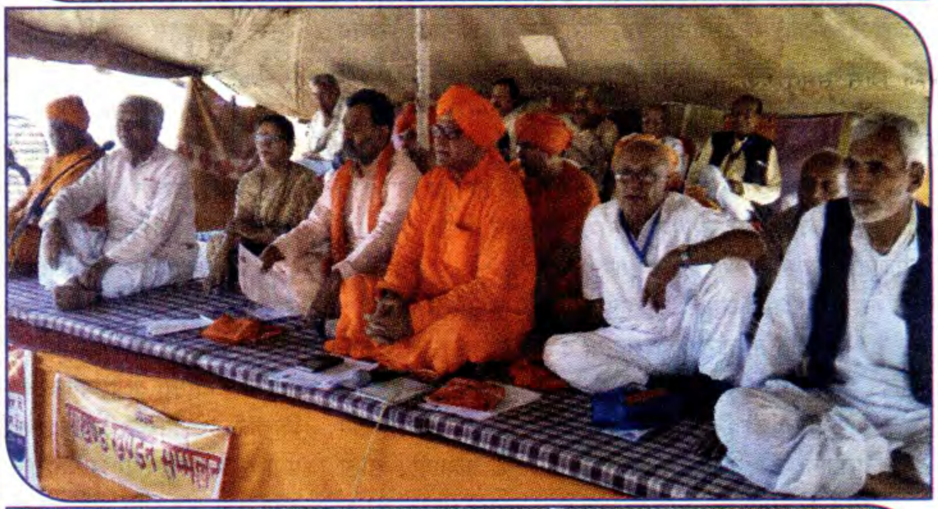

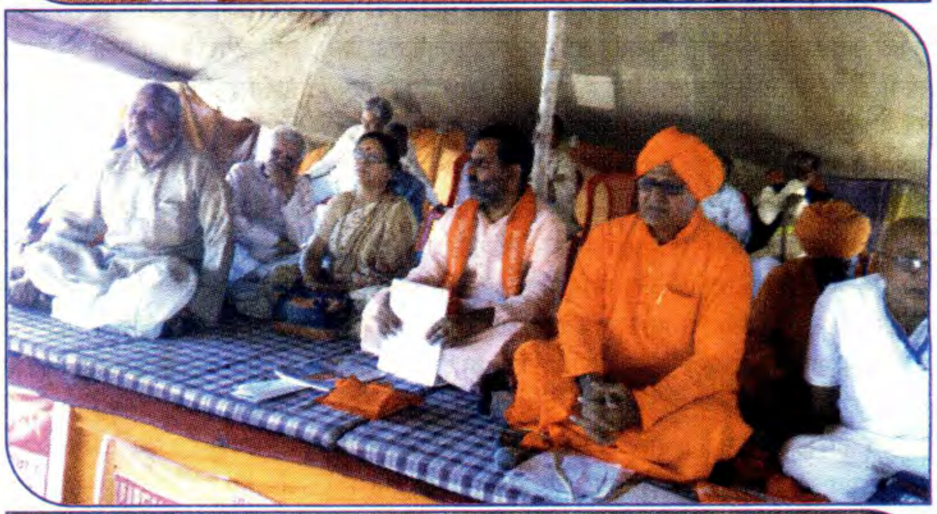

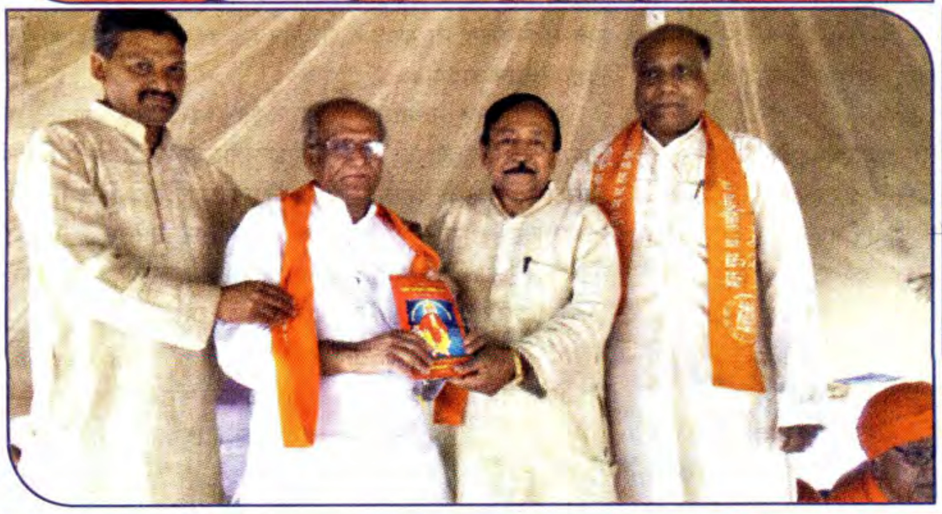

महर्षि दयानन्द का दर्शन एवं राष्ट्रीय एकता

– डॉ. किरन श्रीवास्तव

महर्षि दयानन्द का मत था कि राष्ट्रीय एकता को दृढ़ करने के लिए किसी एकांगी उपाय से काम लेना सार्थक नहीं हो सकता है। जब तक समाज की सर्वांगीण उन्नति नहीं होगी तब तक समाज को सुरक्षित व विकसित करना सम्भव नहीं है। क्योंकि समाज की उन्नति व विकास पर ही राष्ट्र की उन्नति व विकास निर्भर है। महर्षि दयानन्द ही ऐसे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने धार्मिक क्षेत्र में क्रान्ति का सूत्रपात किया और उसे सफलता के शिखर पर पहुंचाया, क्योंकि धार्मिक भावना तथा सामाजिक भावना के सहचर्य से ही एकता की भावना का निर्माण हो सकता है। महर्षि ने उन्हीं दोनों भावनाओं को विकसित किया। वास्तव में जिस राष्ट्रीयता की हम रक्षा करना चाहते हैं, वह अपने साहित्य, संस्कृति एवं इतिहास की भूमिका के बिना सम्भव नहीं है।

कवि और साहित्यकार युगदृष्टा होता हैं भविष्य की घटनाओं एवं रेखाओं का वह पूर्ण संकेत करता है। महर्षि दयानन्द ने भी यही किया था। उन्होंने भारतीय मनीषा को नवजीवन, स्फूर्ति और प्रेरणा प्रदान की, तथा वेद-ज्ञान के सार्वभौम प्रसार से सत्य को उजागर कर दिखाया, जिसे उनके पूर्व भाष्यकार नहीं कर सकें थे। महर्षि ने अपने समय से नये युग को जन्म दिया और युग प्रवर्तक बने। वैदिक धर्म का शंखनाद विश्व पर्यन्त निनादित किया, उपनिषदों की दिव्य वाणी मानव मात्र को सुनाई और वैदिक ज्ञान का गंगाजल पिलाकर सुधीजनों की प्यास बुझाई।

आज जिस समय देश में विघटनकारी प्रवृत्तियों से राष्ट्रीय एकता को खतरा उत्पन्न हो रहा है, इस समय हम महर्षि दयानन्द के सन्देश की उपयोगिता को स्वीकार कर सकते हैं। देश की एकता और अखण्डता के विषय में उनका चिन्तन कितना सार्थक रहा है, यह उनकी रचनाओं से स्पष्ट है। अतः उनके साहित्य एवं रचनाओं का अध्ययन-मनन तथा युग के सन्देश को हृदयंगम करना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। महर्षि दयानन्द त्याग और वैराग्य के अवतार स्वरूप थे। जिस परम वैराग्य से, जिस गहरी तत्परता से और जिस उच्च भाव से उन्होंने अपने सम्पत्तिशाली पितृगृह का परित्याग किया, वह उनके त्यागभाव का परिचायक, प्रमाण और उनकी विशुद्ध वैराग्य विशेषता का सूचक है।

महर्षि दयानन्द ने सम्पूर्ण मानवता के लिए पूरे विश्व में फैली संकीर्णताओं और अन्धविश्वासों से ऊपर उठकर व्यापक सुधार की दिशा दी। उन्होंने अपने विचार का आधार वेद को बनाया। क्योंकि वेद किसी व्यक्ति की मनमानी रचना नहीं सिद्ध हो सकती है और ना ही उसकी शिक्षाओं को किसी काल विशेष या देश विशेष से सम्बद्ध कर सीमित किया जा सकता है। वे सार्वभौम और सार्वकालिक हैं। महर्षि दयानन्द ने यह अनुभव किया था कि वेद ही एकमात्र ऐसा बिन्दु है, जहां सभी मत-मतान्तर मिल सकते हैं। वास्तव में वेद भी ईश्वर स्वरूप ही है। क्योंकि वेद ईश्वर से ही प्रकट हुए हैं। ईश्वर प्राप्ति का साधन भिन्न हो सकता है, परन्तु सबके बीज, आधार, प्रकाशक, स्वामी, शासक एक ईश्वर ही है। भले ही रुचि, योग्यता और श्रद्धा विश्वास की विभिन्नता के कारण उनकी उपासना में भेद हो जाए, तत्व में कोई भेद नहीं है। क्योंकि परिणाम में सभी उपासनाएं एक हो जाती हैं। जैसे भूख सबकी एक ही होती है और भोजन करने पर तृप्ति भी सबको एक ही होती है पर भोजन की रुचि सबकी अलग-अलग होने के कारण भोज्य पदार्थ अलग-अलग होते हैं और जैसे मनुष्यों के वेश-भूषा, रहन-सहन, भाषा आदि तो अलग-अलग होते हैं पर रोना और हंसना एक ही होता है और सुख-दुःख सबको समान ही होते हैं, वैसे ही भगवत्प्राप्ति का सुख और अप्राप्ति का दुख सभी को एक समान ही होता है। उपासना के आरम्भ में भाव और योग्यता की प्रधानता होती है और अन्त में तत्व की प्रधानता होती है। भाव और योग्यता तो व्यक्तिगत हैं, पर तत्व व्यक्तिगत नहीं प्रत्युत सर्वगत हैं।

महर्षि दयानन्द ने वेद ज्ञान और वेद स्वाध्याय को परम धर्म के रूप में मान्यता प्रदान किया है। उनका कहना था कि वेदों में जीवन के गहनतम अध्ययन, मनन, चिन्तन तथा व्याहारिक ज्ञान का पूर्णरूपेण निरूपण है और वेदाध्ययन के पश्चात ही व्यक्ति सुख शांति पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए महर्षि ने सन् 1857 में आर्य समाज की स्थापना की।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

यहां सर्वप्रथम इस पर विचार करना है कि महर्षि का दर्शन क्या है? वास्तव में दर्शन शब्द का अर्थ या निर्वचन इस प्रकार किया जा सकता है- दृष्टिरेव दर्शनम (विशिष्ट) दृष्टि अर्थात विशिष्ट मत ही दर्शन है। दूसरा निर्वचन इस प्रकार है-दृश्यते अनेन इति दर्शनम" अर्थात जिस साधन से परमतत्व को देखा जाए उसे दर्शन कहते हैं। यहां पर महर्षि दयानन्द के दर्शन को एवं राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता में उसकी उपादेयता को साथ-साथ निरूपित किया गया है। वास्तव में दर्शन का आधार तर्क है। अतः तर्क द्वारा ही उनके सिद्धान्तों की उपयोगिता को सिद्ध करने का प्रयास किया गया है।

महर्षि दयानन्द का मत था कि राष्ट्रीय एकता को दृढ़ करने के लिए किसी एकांगी उपाय से काम लेना सार्थक नहीं हो सकता है। जब तक समाज की सर्वांगीण उन्नति नहीं होगी तब तक समाज को सुरक्षित व विकसित करना सम्भव नहीं है। क्योंकि समाज की उन्नति व विकास पर ही राष्ट्र की उन्नति व विकास निर्भर है। महर्षि दयानन्द ही ऐसे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने धार्मिक क्षेत्र में क्रान्ति का सूत्रपात किया और उसे सफलता के शिखर पर पहुंचाया, क्योंकि धार्मिक भावना तथा सामाजिक भावना के सहचर्य से ही एकता की भावना का निर्माण हो सकता है। महर्षि ने उन्हीं दोनों भावनाओं को विकसित किया। वास्तव में जिस राष्ट्रीयता की हम रक्षा करना चाहते हैं, वह अपने साहित्य, संस्कृति एवं इतिहास की भूमिका के बिना सम्भव नहीं है।

महर्षि दयानन्द की दृष्टि दूरदर्शी है यह बात उनकी कृतियों एवं रचनाओं में स्पष्ट झलकती है। उनके धर्म में समभाव था वे सत्य को स्वीकार करने की प्रेरणा सबको देते थे। उनका सभी प्रकार के लोगों से सम्पर्क था। इसका सबसे सटीक उदाहरण तब मिलता है जब 1857 में उन्होंने आर्य समाज की स्थापना बम्बई में की थी, तो उसमें प्रमुख सहायक मुसलमान थे, जिन्होंने उस समय आर्य समाज के भवन निर्माण में 5100/- रुपये का योगदान दिया था। भले ही कोई उनका शिष्य बन जाए लेकिन उस समय उनके मत एवं धर्म से सभी सहमत थे।

राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के लिए निःस्वार्थ भावना अति आवश्यक है। अध्ययन, तप, दान जैसी उदात्त धार्मिक प्रवृत्तियों का अनुष्ठान भी यदि स्वार्थ के लिए किया जाता है, तो वे आसुरी सम्पदा को ही उत्पन्न करती है। दैवी सम्पदा प्राप्त करने के लिए लोकमंगल की कामना से सत्य का ही सहारा लेना पड़ता है। महर्षि ने लोकमंगल के लिए ही आर्य समाज को चलाया था जिसका उद्देश्य था समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना और समाज को सत्य का आभास कराना। महर्षि का कहना था कि आज धर्म के नाम पर अधर्म हो रहा है, जबकि धर्म से कल्याण होना चाहिए। वास्तव में धर्म और सत्य पर्याय है। सत्य धर्म का रूप है और धर्म सत्य का, यही वेदों का विषय भी है। उनका कहना है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है तथा उसी के द्वारा मनुष्य को सत्यासत्य का ज्ञान होता है। वे लिखते हैं :-

"जो ईश्वरोक्त सत्य विद्याओं से युक्त, ऋक् संहितादि चार पुस्तक हैं, जिनसे मनुष्य को सत्यासत्य का ज्ञान होता है उसे वेद कहते हैं।"

उन्होंने वेदों की उत्पत्ति के बारे में "सत्यार्थ प्रकाश" के सप्तम् समुल्लास पृ. 144 पर लिखा है- "प्रथम सृष्टि की आदि में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा इन ऋषियों के आत्मा में एक-एक वेद का प्रकाश किया।"

इसके आगे वे लिखते हैं :-

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्मसनातनम्।
दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थमृग्यजुः सामलक्षणम्।।

"जिस परमात्मा ने आदि सृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न करके अग्नि आदि चारों महर्षियों द्वारा चारों वेद ब्रह्मा को प्राप्त कराए उस ब्रह्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा से ऋक्, यजुर, साम और अथर्ववेद का ग्रहण किया।"

अतः ईश्वर द्वारा प्रकाशित होने के कारण वेद सत्य हैं। वेद की शिक्षा का पुनः प्रचार होना अति आवश्यक है, ऐसा मानकर महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की और वेद को आधार बनाकर उसी के अनुसार जीवन यापन की शिक्षा दी।

राम नवमी जन्म दिवस पर विशेष

शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी

– स्व. आचार्य राजेन्द्र शर्मा

महान पुरुषों की सफलता का रहस्य होता है उनकी संकल्प शीलता, कर्मठता, दृढ़ता, लगन और निष्ठा। सामान्य जन के मनोरथ उठते हैं और विलीन हो जाते हैं। धुन के पक्के अपनी उद्देश्य सिद्धि के लिए पागल हो जाते हैं और अपनी सफलता से संसार को आश्चर्य चकित कर देते हैं। विभिन्न शास्त्रार्थों में विजयश्री का वरण करने वाले, युक्ति और तर्कों के महान् धनी, हृदयस्पर्शी वाणी के स्वामी आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रबल मण्डनकर्त्ता पं. रामचन्द्र देहलवी अपनी विद्वत्ता, तार्किकता, वाग्मिता आदि गुणों के लिए विद्वन्मण्डली में सदा अमर रहेंगे।

सन् 1881 की राम नवमी को आपका जन्म हुआ और माता-पिता ने बड़े प्यार तथा प्रसन्नता से नाम रामचन्द्र रखा। कुशाग्र बुद्धि बालक कठिन पारिवारिक परिस्थितियों में भी 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' की उक्ति को चरितार्थ करने लगा। अपनी कक्षा में प्रथम अथवा द्वितीय स्थान पर रहते हुए अध्यापकों के आशीर्वाद प्राप्त करते रहे। मिडिल की परीक्षा की उत्तीर्णता के पश्चात् इनके पिता जी ने पढ़ाई की स्वीकृति नहीं दी परन्तु विद्याभिलाषी बालक अपनी सूझ-बूझ से अध्ययन करता रहा और एन्ट्रेन्स की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली। शिक्षा का क्रम यहीं पर समाप्त हो गया। स्वाध्याय उनके ज्ञान का आधार बना।

अल्पावस्था में ही इनको पारिवारिक विवशताओं ने वैवाहिक बन्धन में बाँध दिया। परिवार का उत्तरदायित्व, आर्थिक उलझनें इनको उलझा न सकीं, निष्काम कर्मयोगी के सदृश उत्तरदायित्वों का निर्वाह भी करते रहे और अपने ज्ञान की अभिवृद्धि भी करते रहे। अपने को ज्ञान-समर्थ बनाने हेतु सफल प्रयास किया।

स्वाभिमानी, कर्मण्यता के धनी इस महान व्यक्तित्व ने रुकना-झुकना नहीं जाना। सर्विस का त्याग किया परन्तु झुके नहीं। पारिवारिक परिस्थितियाँ उलझनों से भरी थीं। आर्थिक दुरवस्था थी, बच्चे छोटे-छोटे थे और सहचारिणी धर्मपत्नी का स्वर्गवास हो गया परन्तु कर्मयोगी अपने पथ से विचलित नहीं हुआ। धर्म-प्रचार चलता रहा शास्त्रार्थ होते रहे, विधर्मियों के मुख बन्द होते रहे और आर्य समाज के सिद्धान्तों के विजय की पताका फहराती रही और वैदिक मान्यताएं मनवाई जाती रही। ऐसे कर्मयोगी को शतशः नमन है।

विजयश्री यों ही नहीं मिल जाती है, वह मूल्य मांगती है, और उसका मूल्य होता है - अथक परिश्रम और दृढ़ इच्छा शक्ति। ज्ञान अर्जन चल रहा है। परम परीक्षक प्रभु ने आँखों को कष्टित कर दिया।

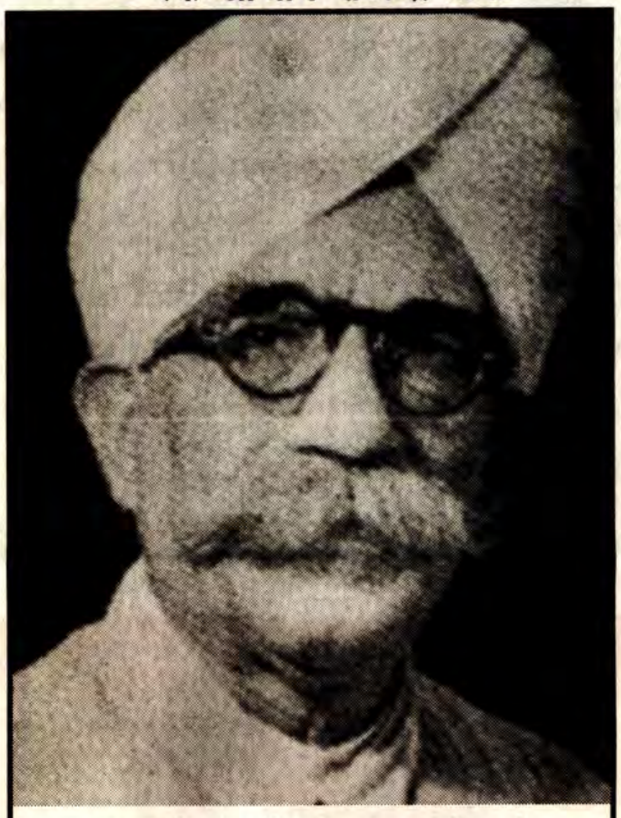

शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी

6 मास तक आँ खोंपर प ट्ट ीबंधीरही परन्तु अध्य यन चल रहा था। अपने सम्बन्धी से पुस्तकों को सुना करते थे और ज्ञान-वृद्धि करते रहे। धन्य है ऐसी प्यास को।

दिल्ली में चांदनी चौक में फब्बारे के पास दो दिन पादरी और दो दिन मौलवी अपने-अपने धर्म का प्रचार करते थे। पंडित जी को पता लगा वे वहाँ जाते, दोनों के व्याख्यान सुनते और सप्ताह के शेष दो दिन उनका प्रवचन होने लगा और मौलवी तथा पादरी की धज्जियाँ उड़ने लगी। वाणी की मधुरता और ओजस्विता व्यक्तित्व की सौम्यता, तर्क और युक्तियों की तेजस्विता का परिणाम था दोनों ही वहाँ से भाग गये क्योंकि उनको कोई सुनने को तैयार नहीं। पंडित जी के बोलने पर इतनी भीड़ जुटने लगी कि चांदनी चौक के आवागमन में अवरोध पैदा होने लगा। तब आपको बोलने के लिए गाँधी ग्राउण्ड में स्थान दिया गया।

यह व्याख्यान का कार्यक्रम सन् 1910 से 1925 तक निरन्तर 15 वर्ष तक चला। कोई व्यवधान उनको कर्मठता से रोक न सका। इसी मध्य धर्मपत्नी का देहान्त हुआ। एक मात्र पुत्र प्रभु को प्यारा हुआ। अनेक विघ्न बाधाएं आई परन्तु 'प्रारभ्य चोत्तम जनाः न परित्यजन्ति।' यह है - देहलवी जी की यशस्विता का रहस्य। पंडित जी की विद्वत्ता सर्वतोमुखी थी। अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, अरबी, फारसी के वे पूर्ण विद्वान् थे। वैदिक साहित्य का उन्होंने गम्भीर अध्ययन किया और समस्त मत-मतान्तरों का गहरा तथा समीक्षात्मक अध्यापन किया था। इसी कारण उनकी पकड़ प्रत्येक पर थी और प्रतिपक्षी निरुत्तर हो जाता था। उनकी शैली बेजोड़ थी। वे अत्यन्त प्रत्युत्पन्न मति थे। हाजिर जबाबी अद्वितीय थी। आयतों का उच्चारण इतना स्पष्ट तथा तरन्नुम के साथ करते थे कि सब प्रभावित हो जाते थे। आर्य समाज को एक ऐसा शास्त्रार्थ महारथी मिला जो अजेय था। उन्होंने न जाने कितने शास्त्रार्थ किये और आर्य समाज की यशस्विता को बढ़ाया। सादा जीवन, उच्च विचार और सात्त्विक अन्न और सात्विक मन का आदर्श उनके जीवन में था। शान्त, सौम्य, स्वभाव, छल-प्रपंच से दूर, सरलता से भरा उनका जीवन था। सिद्धान्तों के प्रति वज्र से भी कठोर और हृदय की मृदुता में नवनीत पंडित जी को जनता का अपार सम्मान प्राप्त हुआ। तार्किकता और हाजिर जवाबी आर्य जगत के मानस पर सदा अंकित रहेगी। एक बानगी देखिए -

एक शास्त्रार्थ में मौलाना सना उल्ला ने कहा - पंडित जी, जहाँ आपके राम समाप्त होते हैं ('म' पर) वहीं हमारे मुहम्मद साहब शुरू होते हैं, अतः अब आपको राम का नाम छोड़कर 'मुहम्मद'' का जप करना चाहिए। पंडित जी ने कहा - शाबाश, मौलाना शाबाश, परन्तु मौलाना साहब, बीच में ही क्यों रूक गये। आगे भी कहो। मौलाना बोले- आगे क्या है? आप ही कह दीजिए। पंडित जी ने कहा - जहाँ मुहम्मद साहब समाप्त होते हैं ('द' पर) वहाँ से दयानन्द शुरू हो जाते हैं। इसलिए मुहम्मद साहब को छोड़कर दयानन्द के गीत गाओ। मौलाना ने पूछा दयानन्द कहाँ समाप्त होते हैं। पंडित जी ने कहा दयानन्द जहाँ से प्रारम्भ होता है, वहाँ ही समाप्त होता है। ऐसे उस महान् पुरुष को शतशत नमन है जिसने तिल-तिल जलकर भी आर्यसमाज को गौरवान्वित किया अपने यशः जीवन को अमर बना दिया।

- आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली-92

वैदिक आदर्शों द्वारा ही समाज का संरक्षण

– डॉ. भारतेन्दु द्विवेदी

वर्तमान समय में समाज में परिवर्तन अत्यन्त तीव्रता के साथ परिलक्षित हो रहा है। कम्प्यूटर और इण्टरनेट की दुनियाँ में मनुष्य एक मशीन बनता जा रहा है। समाज पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का अन्धानुकरण कर रहा है। धन और विलासिता की चकाचौंध में आकर्षित होकर भागा जा रहा है। वह अपने अस्तित्व को भी खो रहा है। येन-केन प्रकारेण धनोपार्जन और विलासितापूर्ण जीवन यापन जीवन का अंग बनता जा रहा है। समाज से भी वह अलग होता जा रहा है। स्वयं में केन्द्रित होने के कारण उसके अन्दर मानवीय संवेदनाएँ भी समाप्त हो रही हैं। समाज का कुछ वर्ग नशा मदिरा का शिकार होता जा रहा है। अतः परिवार और समाज का स्वरूप बदल रहा है। इन परिस्थितियों ने अनेक विकृतियों को जन्म दिया है। जिससे समाज के समक्ष अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। परिवार और समाज में विघटन की स्थिति उत्पन्न हो रही है। व्यक्ति में मानसिक शान्ति का अभाव है। पाश्चात्य देश मानसिक शान्ति के लिए भारत की ओर दृष्टि लगाए हुए हैं। अध्यात्म की ओर उनकी प्रवृत्ति बढ़ रही है। वे भौतिकता को त्यागकर मानसिक शान्ति के लिए अग्रसर होने के इच्छुक हैं।

भारत विश्वगुरु कहा जाता है। भारत से ही ज्ञान विज्ञान का प्रसार हुआ। भारतीय संस्कृति को 'सा प्रथमा संस्कृतिः विश्ववारा' कहा जाता है। सृष्टि के प्रारम्भ में मानव कल्याण के लिए वेदों को ऋषियों के माध्यम से ईश्वर ने प्रदान किया था। एक समुन्नत समाज की स्थापना हेतु आवश्यक उपदेश दिए थे तथा मनुष्य के लिए आवश्यक कर्त्तव्यों का विधान किया था। ऋषियों ने इसी आधार पर भारतीय समाज की स्थापना की थी। एक विशाल भवन की नींव के समान ईश्वर प्रदत्त ज्ञान से समाज रूपी भवन की नींव रखी गई थी। यही कारण है कि अनेक आक्रमणों और प्रहारों को सहने के बाद भी भारतीय संस्कृति के मूल्यों पर आधारित समाज विश्व में अपना एक अस्तित्व बनाए हुए है। यदि यह नींव कमजोर होती तो समाज कब का बिखर चुका होता, साथ ही राष्ट्रीय एकता और अखण्डता का सूत्र भी टूट जाता।

वेदों में समुन्नत समाज की परिकल्पना कर समाज को समुन्नत बनाने, प्रगतिशील बनाने और उत्कर्ष की ओर ले जाने का मार्गदर्शन प्राप्त होता है। समाज को संगठित बनाने के लिए ऋग्वेद का संज्ञान सूक्त संगठन की भावना को जागृत करता है।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं, सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे, संजानाना उपासते।। ऋग्वेद 10.191.2

समाज में आज व्याप्त ऊँच-नीच की भावना को समाप्त करने के लिए वेदों में निर्देश है कि समाज में ऊँच-नीच का भेदभाव नहीं होना चाहिए। भ्रातृभाव से संगठित समाज ही उन्नति करता है।

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते, सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।। ऋग्वेद 5.60.5

समाज को उन्नत बनाने के लिए आवश्यक है कि समाज का कोई वर्ग उपेक्षित न रहे तथा कोई भूखा प्यासा न रहे। सभी निर्भय होकर रहें।

इन्द्रेण दत्तो वरुणेन शिष्टो, मरुद्भिरुग्रः प्रहितो न आगन्।
एष वां द्यावापृथिवी उपस्थे, मा क्षुधन्मा तृषत्।। अथर्व. 2.29.4

वैदिक ऋषियों ने जहाँ मनुष्य के कल्याण की कामना की थी वहीं समाज के आवश्यक अंग पशुओं की भी निरोगता की कामना की थी।

द्विपाच्चतुष्पादस्माकं सर्वमस्त्वनातुरम्। ऋग्. 10.97.20

शिक्षित समाज की आवश्यकता अनुभव करते हुए निर्देश दिया था कि समाज में शिक्षा का प्रसार हो, शिक्षित-अशिक्षितों को शिक्षा और ज्ञान प्रदान करें।

केतुं कृण्वन्नकेतवे, पेशो मर्या अपेशसे।
सुमुषद्भिरजायथाः। ऋग्.1.6.3

एक ओर माता-पिता के द्वारा पुत्रों का संरक्षण करने तथा दूसरी ओर माता-पिता की सेवा पुत्रों द्वारा किए जाने का निर्देश है। आज समाज में यह बहुत बड़ी समस्या का रूप ले रहा है। माता-पिता को कहा गया है कि वे सन्तान को योग्यतम बनाएँ।

सुरेतसा पितरा भूम चक्रतुरुरु प्रजाया अमृतं वरीमभिः। ऋग्. 1.159.2

प्र व एको मिमय भूर्यागो यन्मा पितेव कितवं शशास। ऋग्. 2.29.5

पुत्र के लिए उपदेश है कि वह पिता के अनुकूल कर्म करने वाला हो और माता के साथ समान मन वाला हो।

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः। अ. 3.30.2

एक अन्य स्थान पर माता-पिता के कल्याण की कामना की गई है।

स्वस्ति मात्र उते पित्रे नो अस्तु। अ. 1.31.4

यदि हम चाहते हैं कि हमारा राष्ट्र सुदृढ़ हो। समाज संगठित हो, परिवार में सौमनस्य हो तो आवश्यक है कि हमें उन प्राचीन मूल्यों को अपने जीवन में अपनाते हुए प्रगति और उन्नति की ओर अग्रसर होना होगा। अपनी प्राचीन संस्कृति के सांस्कृतिक मूल्यों को अपनाए बिना अपनी संस्कृति की भी रक्षा सम्भव नहीं है।

आर्य समाज की गतिविधियाँ

आर्य समाज नागदा का 53वाँ 51 कुण्डीय राष्ट्र रक्षा यज्ञ व चार दिवसीय संगीतमय वेद कथा सफलतापूर्वक सम्पन्न

नागदा : आर्य समाज नागदा का आर्य गार्डन सेवाराम जी पटेल की बावड़ी पाडल्याकला पर आर्य समाज नागदा द्वारा 53वां 51 कुण्डीय राष्ट्ररक्षा यज्ञ का शुभारम्भ समाजसेवी लायन गोविन्द मेहता, पार्षद विजय पटेल, अभिभाषक रमेश चन्देल, आर्य समाज के संरक्षक पटेल रामसिंह जी आर्य, यशवन्त आर्य, दुर्गाबक्षसिंह व बड़ी संख्या में उपस्थित आर्यजनों की उपस्थिति में ध्वजारोहण कर किया गया। ध्वज वंदना की सरस प्रस्तुति डॉ. सत्यार्थी द्वारा की गई।

ध्वजारोहण के पश्चात् यज्ञाचार्य डॉ. पं. लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी के आचार्यत्व में 51 कुण्डीय राष्ट्ररक्षा यज्ञ का शुभारम्भ हुआ। यज्ञ समाप्ति पर आर्य जगत की प्रसिद्ध विदुषी सुश्री अंजली आर्या द्वारा यज्ञ व बलिवैश्वदेव यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित श्रोताओं व यजमानों को आर्य संस्कृति की रक्षा का संकल्प दिलाया।

रात्रिकालीन प्रथम दिवस कथा में आर्य समाज व स्वामी दयानन्द व आर्यजनों के परिचय के साथ विश्व में आर्य समाज की उपलब्धि कई प्रमाणों के साथ दशाई गई। वर्तमान में धूर्त, व्यभिचारी, ढोंगी, कपटी, शराबी, मांसाहारी, कुसाधुओं, मठाधीशों की आज बाढ़ सी आ रही है। मेरे देश की भोली जनता इनके जाल में फंसती चली जा रही है। ऐसे में आर्य समाज ही देश की जनता को बचा सकता है। आर्य साहित्य का प्रचार–प्रसार बढ़ाओ देश को बचाओ। ऊर्जामयी विचार सुश्री अंजली आर्या ने रखे।

द्वितीय दिवस यज्ञ का शुभारम्भ यथा समय सम्पन्न हुआ। यज्ञ समाप्ति के बाद नारी सशक्तिकरण सम्मेलन की पृष्ठभूमि संचालनकर्ता डॉ. सत्यार्थी द्वारा रखी गई। बेटी बचाओ, कन्या भ्रूण हत्या विषय पर मंचासीन विधायक दिलीप सिंह शेखावत की धर्मपारायणा पत्नी श्रीमती इन्दु कुंवर शेखावत के मुख्यातिथ्य में सम्पन्न हुआ। जिसमें मुख्य रूप से सुमन शर्मा (भाजपा जिला मंत्री), सीमा सारस्वत (नारी शक्तिकरण मंच नागदा), पार्षद उषा गुर्जर, पार्षद विनिता कमल शर्मा, सीमा बिफोर टेलर्स, पार्षद प्रेमलता मकवाना, मंजु टांक, पार्षद राजकुमारी चौरसिया, ऋतु अरोड़ा, श्रीमती सुमन सत्यार्थी महिला आर्य समाज की संयोजिका ऋतु पाण्डे, देवकुंवर पटेल आदि मंचासीन थे। सम्मेलन में सुश्री अंजली आर्या ने अपने उद्बोधन में पूरी ऊर्जा के साथ सभी शंकाओं का समाधान कर नारी की मर्यादा क्या है। वेद के प्रमाणों से समझाईश दी। जिसे बड़ी संख्या में उपस्थित महिलाओं ने बहुत सराहां वहीं मंच से बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ व लिंग परीक्षण कन्या भ्रूण हत्या को लेकर बहुत ही मार्मिक वातावरण में नारी सशक्तिकरण सम्मेलन सम्पन्न हुआ। उपस्थित महिलाओं का स्वागत महिला आर्या समाज की संयोजिका ऋतु पाण्डे ने किया।

तृतीय दिवस यथा समय प्रातःकालीन यज्ञ आचार्य डॉ. पं. लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। तृतीय दिवस युवा सशक्तिकरण सम्मेलन नगर के संचालित विद्यालयों के संचालक, प्राचार्य, व्यायाम शिक्षक, नगर के सभी पत्रकार बन्धु व प्रेस क्लबद्वय के अध्यक्ष सामाजिक संगठनों के प्रमुखजन विशेष रूप से मंचासीन थे। समारोह में भाजपा व कांग्रेस पार्टी के प्रमुख जन भी मंच पर उपस्थित थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन कर रहे डॉ. सत्यार्थी द्वारा देश की युवा पीढ़ी, फैशन, शराब, तम्बाखू, गुटखे व सिगरेट के गिरफ्त में होकर राष्ट्र से बेखबर हो खाओ–पीओ ऐश करो, अपराध की ओर धंसती युवा पीढ़ी वाली विरेचन नीति की चर्चा (राक्षसवृत्ति) करते हुए युवाओं को संस्कारित करने की आवश्यकता पर बल दिया। अंजली आर्या ने वेद आज्ञानुसार युवा पीढ़ी को, समाज को जीवन जीने की अनिवार्यता के साथ आज युवा वर्ग में सुधार की बात करते हुए मंचासीन उपस्थित नगर के प्रबुद्धजनों व बड़ी संख्या में उपथित धर्मालुजनों से अपनी सन्तानों को खासकर युवक–युवतियों को नशे से दूर रहने, कुटेवो, बुरी आदतों से बचकर, देशभक्त के रूप में दीर्घायु जीवन जीने की बात कही।

51 कुण्डीय राष्ट्ररक्षा यज्ञ के चतुर्थ दिवस पर यथा समय यज्ञ का शुभारम्भ हुआ। आर्य समाज नागदा के चतुर्थ दिवसीय कार्यक्रम की समापन बेला में मुख्य रूप से लक्ष्मीनारायण पाटीदार, गोविन्द आर्य, शिवसिंह जी पटेल मुंजाखेड़ी, उंकारसिंह जी ढाबला, गोविन्द सिंह जी बामता, नन्दकिशोर सगीत्रा, मदनलाल धाकड़ सभी खाचरौद, रमेश जी बुच्चाखेड़ी, दरबार सिंह जी कानड़, नागर सा, उज्जैन, भेरुलाल टांक, बसन्त मालपानी, नन्दकिशोर जायसवाल आक्या जागीर, रमेश चौधरी, प्रकाश जैन पत्रकार नई दुनिया, राघवेन्द्र ठाकुर पत्रकार, गिरीश गुप्ता पत्रकार भास्कर आदि मंचासीन थे। यज्ञ समाप्ति पर कई यजमानों ने बीड़ी न पीना, तम्बाखू का सेवन न करना व शराब व मांस सेवन न करने का संकल्प लिया। इन यजमानों का आर्य समाज नागदा द्वारा माला पहना कर तथा साहित्य भेंटकर स्वागत किया गया।

अन्त में शब्दों की कुशल कारागरी से कसीदाकारी कर कार्यक्रम का सफल संचालन कर रहे आर्य समाज नागदा के धर्माचार्य डॉ. पं. लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी द्वारा गाये विदाई गीत ने वातावरण को गमगीन कर दिया। यहाँ तक कि स्वयं अंजली आर्या स्वयं अपने आंसू नहीं रोक पाई। सभी ने अंजली को अश्रुपूरित विदाई दी। आभार यशवन्त आर्य ने माना।

राष्ट्र प्रगति में नारी का योगदान अतुलनीय

शिवगंज :– सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी ने कहा कि आमज की सेवा करना ही सच्चे आर्य समाजी का कर्त्तव्य होता है। वे शनिवार को आर्य समाज के तत्वावधान में माली समाज भवन में आयोजित सम्मान समारोह में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि नारी शक्ति को राष्ट्र के उत्थान का आधार मानने पर ही राष्ट्र का उत्थान सम्भव होगा। राष्ट्र की प्रगति में नारी का योगदान अतुलनीय है। आर्य समाज का कोई कार्यकर्ता देश के किसी भी इलाके में सम्मानित होने पर आम आर्य समाजी स्वयं को गर्वित महसूस करता है। पालिकाध्यक्ष कंचन सोलंकी ने कहा कि जहाँ नारी का सम्मान होता है वहीं देवता निवास करते हैं। उपमंत्री श्री रामसिंह आर्य ने कहा कि आर्यवीरों को नगर के विकास में नारी शक्ति के साथ कंधा मिलाकर सहयोग करना चाहिए। अतिथियों ने अहमदाबाद महानगर पालिका के काउंसलर शिवगंज निवासी मुकेश कुमार, पार्षद बरखा आर्य आदि का बहुमान किया। इस अवसर पर उपप्रधान हरदेव आर्य, उपमंत्री दलपतसिंह, आर्यवीर दल राजस्थान के अधिष्ठाता भंवरलाल आर्य, जालोर आर्यवीर दल अध्यक्ष कृष्णकुमार, संचालक प्रशांत सिंह, महामंत्री शिवदत्त आर्य, विनोद आर्य, सौभाग्य सिंह, नारायण सिंह, शेषाराम, जितेन्द्र सिंह पंवार, जयपाल सिंह, अशोक मीणा, अरूण आर्य, राजेन्द्र सोलंकी, मदन आर्य, गुणवंत कुमार समेत संस्था सदस्य मौजूद थे।

आर्य समाज हरजेन्द्र नगर कानपुर का 47वाँ वार्षिकोत्सव

आर्य साज हरजेन्द्र नगर कानपुर का 47वाँ वार्षिकोत्सव 14 से 17 अप्रैल, 2016 तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। 14 अप्रैल को सांयं 3 बजे से 6 बजे तक विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर आर्य जगत के ख्याति लब्ध विद्वान तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आर्य समाज मंदिर प्रांगड़ में सम्पन्न हो रहे इस उत्सव में अनेकों कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठायें।

आर्य महिला सभा (अमृतसर) के तत्वावधान में
आर्य सम्मेलन का भव्य आयोजन

अध्यक्ष माता जगदीश आर्या जी द्वारा विशेष निमंत्रण

स्थान : बगीची खुशी राम चौक लक्ष्मणसर

तिथि : 18 अप्रैल, 2016 (सोमवार), समय : 11 से 2 बजे तक

दीप प्रज्ज्वलन : इन्द्रजीत जी, अशोक मेहता जी, विनोद जी, प्रवीण जी, अरुण जी, मुकेश पसाहन जी, सुरजीत कुमार जी, विपिन कुमार जी, सत्यदेव जी, वरिन्द्र जी, प्रधान बगीची खुशी राम (सागर जी), विजय कुमार जी ठुकराल जी द्वारा।

मुख्य वक्ता : स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान सार्वदेशिक सभा
: स्वामी वेद प्रकाश जी नूरपुर वाले
: सवामी मधुरानन्दा जी

मुख्य अतिथि : सविता जी दिलावरी, हीरा लाल दुग्गल जी, जनक राज जी दुग्गल, विजय सर्राफ जी, सतीश जी, विजय कपूर, संतोष जी, सुधीर जी

विशेष अतिथि : समाज सेविका स्वराज ग्रोवर जी, ममता अरोड़ा जी, दीपक बब्बर जी सभी आर्य समाजों के अधिकारी।

भजनोपदेशक : दिनेश जी पथिक, शिवानी जी, आर्य महिला सभा की बहनें, इन्द्रपाल जी, राकेश काठीया जी।

आप सब परिवार सहित इस कार्यक्रम में सादर आमंत्रित हैं।

कार्यक्रम के अन्त में सभी आर्य समाज के अधिकारियों को सम्मानित किया जायेगा। उसके बाद माता जी सबका धन्यवाद करेंगे और आशीर्वाद देंगे। तत्पश्चात् ऋषिलंगर होगा।

निवेदक : आर्य महिला सभा, अमृतसर, मो.: 9888925803 (माता जी), 9878746967 (वन्दना आर्या)

राज्यपाल को दी यज्ञों से वृष्टि होने व स्वाइन फ्लू प्रदूषण परमाणु विकिरण निवारक परीक्षणों की जानकारी राज्यपाल ने माँगा राजकीय स्तर पर यज्ञों हेतु बजट प्रस्ताव

जयपुर : 12 अप्रैल, 2016 को सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष यशपाल 'यश' के नेतृत्व में आर्यों का प्रतिनिधि मण्डल महामहिम राज्यपाल से राजभवन में मिला।

यज्ञों से वृष्टि होने, स्वाइन फ्लू आदि घातक प्राणलेवा विषैले वायरसों, प्रदूषण व परमाणु विकिरण रोकने हेतु किये प्रयासों व परीक्षण रिपोर्टों से अवगत कराया। राज्यपाल श्री कल्याण सिंह जी ने परिषद् द्वारा चलाये जा रहे जातिवाद के विरुद्ध जंग, वीरांगना सम्मान, अस्थमा चिकित्सा व रक्तदान आदि कार्यक्रमों की प्रशंसा की।

श्री सिंह जी ने शिष्ट मण्डल से कहा कि ऋषि दयानन्द जी की ये अनुपम देन है इससे वायुमण्डल शुद्ध होता है। सिंह जी ने राजकीय स्तर पर यज्ञों हेतु कार्य योजना व बजट प्रस्ताव देने का आग्रह किया। 'यश' ने शीघ्र विस्तृत योजना प्रस्तुत करने का आश्वासन दिया। महामहिम को गायत्री मंत्र पट्ट व दयानन्द का चित्र भेंट किया गया। प्रतिनिधि मण्डल में सुनील अरोड़ा, श्रीमती सुधा मित्तल व डॉ. प्रमोद पाल मौजूद रहे।

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 15–16 अप्रैल, 2016
प्रकाशन की तिथि : 14 अप्रैल, 2016
वैदिक सार्वदेशिक
14 से 20 अप्रैल, 2016
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

सब यज्ञों का महान् तत्त्व विश्वतोधार होना

प्रतिष्ठा में :–

गों
आर्य प्रतिनिधि सभा
न्मान रोड, नयी दिल्ली

अवितरण की दशा में लौटाएं –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

**स्वर्यन्तो नापेक्षन्तऽआ द्यां रोहन्ति रोदसी।
यज्ञं ये विश्वतोधारं सुविद्वांसो वितेनिरे।।**

–यजु० १७/६८, अथर्व० ४/१४/४

ऋषिः–भृगुः।। देवता–आज्यम्ः।। छन्दः–अनुष्टुप्।।

विनय–हमारे सब यज्ञ 'विश्वतोधार' होने चाहिएँ, पर प्रायः हमारे यज्ञ एकतोधार होते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम दूर तक देखकर, सब संसार को दृष्टि में रखकर लोकोपकार नहीं करते, अतः हमारे ये यज्ञकार्य परिमित, अदूरगामी और एकपक्षीय होते हैं। हम केवल अपने समाज, अपने कुटुम्ब, केवल एक संस्था या केवल अपने देश व राष्ट्र के हित के लिए अपने उपकार–कार्य करते हैं और उनके लिए बड़े–बड़े स्वार्थ–त्याग तक करते हैं,पर यह ध्यान नहीं रखते कि वह संस्थाहित, देशहित, वह राष्ट्रहित संसार के हित के भी अविरुद्ध होना चाहिए। विश्वतोधार यज्ञ वह है जो 'सर्वभूतहित' के लिए होता है, जो सम्पूर्ण विश्व के भले के लिए, प्राणिमात्र के हित की दृष्टि से होता है, अथवा यूँ कहें कि जो परमात्मा की प्रीत्यर्थ होता है। वही यज्ञ पूरी तरह फैला, वितत होता है, व्यापक होता है। वही यज्ञ 'विष्णु' कहाता है। पर यज्ञ के इस 'विष्णु', 'विश्वतोधार' रूप को संसार में कुछ उत्तम ज्ञानी ही समझते हैं और ये विरले ही उसे वितत करते हैं, अतः ये 'सुविद्वान्' तो शीघ्र ही पृथिवी और अन्तरिक्ष के स्थूल और मानसिक लोकों को लाँघकर आत्मा के सुखमय और प्रकाशमय लोक में चढ़ जाते हैं, आसानी से पहुँच जाते हैं। वे उस आत्मिक सुख की ओर जाते हुए, उसका आनन्द लेते हुए दुनिया की किसी भी अन्य वस्तु की परवाह नहीं करते। 'विश्वतोधार' यज्ञ करने वालों को 'स्वः' का एक ऐसा दृढ़ अवलम्बन मिल जाता है कि वे फिर संसार के अन्य किसी भी सहारे की तनिक भी अपेक्षा नहीं करते। चाहे उनके साथी उनसे छिन जाएँ, उनका प्रभुत्व नष्ट हो जाए, उनकी सब प्रतिष्ठा जाती रहे, पर वे इन सहारों के रखने के लिए भी कभी अपने यज्ञ को थोड़ी देर के लिए भी छोटा, अव्यापक नहीं करते। वे अपनी दृष्टि को कभी नीची या संकुचित नहीं करते। ऊपर चढ़ते हुए नीचे की क्षुद्र चीज़ों पर कभी उनकी दृष्टि ही नहीं पड़ती। यही रहस्य है जिससे वे ऊपर–ऊपर ही जाते हैं और शीघ्र सुखमय–प्रकाशमय द्युलोक में जा पहुँचते हैं।

शब्दार्थ–**ये**=जो **सुविद्वांसः**=उत्तम ज्ञानी महापुरुष **विश्वतोधारं यज्ञम्**=विश्वतोधार यज्ञ को, सबको सब ओर से धारण करने वाले यज्ञ को **वितेनिरे**=विस्तृत करते हैं वे **स्वः यन्तः**=आनन्दमय स्थिति को जाते हुए **न अपेक्षन्त**=किसी अन्य वस्तु की अपेक्षा नहीं करते या नीचे नहीं देखते, **रोदसी**=वे द्यावापृथिवी को लाँघकर **द्याम्**=द्युलोक में **आरोहन्ति**=चढ़ जाते हैं।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

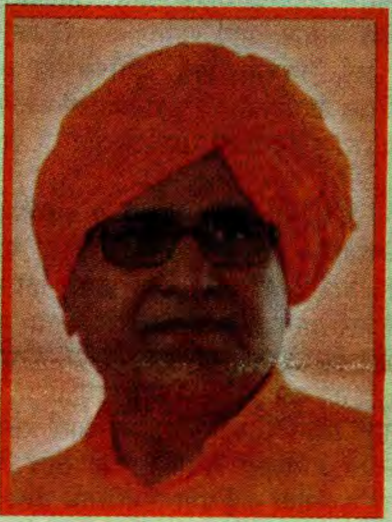

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

मुंबई में दो दिवसीय वेद–वेदांग ज्योतिष राष्ट्रीय सम्मेलन संपन्न

फलित ज्योतिष से व्यक्ति की कार्यक्षमता पर पड़ता है गलत असर

– स्वामी आर्यवेश

मुंबई : वैदिक मिशन मुम्बई के तत्वावधान तथा मिशन के अध्यक्ष डा. सोमदेव शास्त्री के मार्गदर्शन में स्थानिय आर्य समाज मंदिर शांताक्रुज पर 26–27 मार्च 16 कोआयोजित दो दिवसीय वेद–वेदांग ज्योतिष विशाल राष्ट्रीय सम्मेलन संपन्न हुआ।सम्मेलन में गांव नेनोरा से ठाकुर भारतसिंह शेखावत पत्रकार बाबूलाल नागर बाबूलाल पाटीदार नेनोरा आर्यसमाज मंत्री रामेश्वर आर्य शिवनारायण नागर दशरथ पाटीदार दयानंद पाटीदार प्रहलाद पाटीदार श्रीमती माया पाटीदार वर्षा पाटीदार बरखेड़ापंथ से कन्हैयालाल कारपेंटर जगदीश माकनिया आदि क्षेत्रीय प्रतिनिधियों सहित दिल्ली गुजरात कलकत्ता मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, चंडीगढ़, तेलंगाना, हिमाचल, राजस्थान सहित कई प्रांतों से आये संतसमाज व विद्वानों ने भघग लिया।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मंचासीन वैदिक विरक्त मंडल दिल्ली के महामंत्री तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने ज्योतिष की चर्चा करते हुए बताया कि ज्योतिष का धन्धा आज बहुत ही जोर–शोर से चल रहा है और इसको बढ़ाने में इलेक्ट्रानिक मीडिया का बहुत बड़ा योगदान है। भोले–भाले लोगों को ठगने की अनोखी व्यवस्था की गई है। यह निरा पाखण्ड है और इससे बच कर रहना चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे सम्मुल्लास में इस बात पर बल दिया है कि बच्चों को ज्योतिषयों से बचाना चाहिए। क्योंकि यदि एक बार बच्चों के मन पर ग्रहों का प्रभाव बैठ गया तो वह बड़े होने पर और बल पकड़ेगा। बच्चे ग्रहों से इतना नहीं डरते जितना कि बड़े डरते हैं। स्वामी जी ने कहा कि गणित ज्योतिष विज्ञान के अनुकूल है और फलित ज्योतिष विज्ञान के विरुद्ध। फलित ज्योतिष कल्पित है जबकि गणित ज्योतिष ग्रहों की गति पर निर्भर करता है। स्वामी जी ने कहा कि जन्मपत्री, फलित ज्योतिष भूत–प्रेत में विश्वास भविष्यवाणियों, मुहुर्त आदि से अपने-परिवार को बचायें तथा अन्यों को जागरूक करें क्योंकि इन सबके चक्कर में फंसकर व्यक्ति नाकारा हो जाता है और उसकी कार्यक्षमता पर विपरीत असर पड़ता है।

इसी कड़ी में बनारस से नंदीता शास्त्री ने ज्योतिष के स्वरूप में मांगलिक कुंडली विज्ञान की खगोल विज्ञान आदी पर रिसर्च कर यह निष्कर्ष निकाला की ज्योतिष पाखंड है। इसी तरह स्वामी धर्मानंद सरस्वती स्वामी ब्रम्हानंद श्री मिठाईलाल सिंह श्री अरूण अबरोल ठा. विक्रमसिंह श्री योगेन्द्र ठक्कर डा.ज्वलंत कुमार अमेठी डा. लोकेश मेरठ सहित कई विद्वानों ने ज्योतिष के आधार पर पनप रहे आडंबर पर चर्चा कर उपस्थित श्रोताओं का भ्रम दूर किया। साथ ही डा लोकेश ने वेदो के आधार पर रचित पंचांग वितरित किए।इस अवसर पर मुम्बई वैदिक मिशन द्वारा आमंत्रित अतिथियों व संतो तथा दैनिक अवंतिका उज्जैन के पत्रकार बाबूलाल नागर का मोतियो की माला एवं शाल से सम्मान किया गया।

कार्यक्रम के दूसरे दिन 27 मार्च द्वितीय सत्र में सामूहिक यज्ञ व श्री सुखपाल आर्य के भजनोपरान्त उपरोक्त सभी संतो व विद्वानों के जगत कल्यांणार्थ प्रवचन हुए। इसी कड़ी में मिशन के मंत्री संदीप आर्य ने वैदिक मिशन का परिचय व स्थापना से लेकर आज तक की गतिविधियों की जानकारी दी।

प्रणव शास्त्री ने भी इंग्लिश में गणित व फलित ज्योतिष पर जानकारी दी। कार्यक्रम में डा.शास्त्री द्वारा रचित रामायण संदेश पुस्तक का अतिथियों के कर कमलो से विमोचन किया गया।

संचालन व आभार की कड़ी में डा. शास्त्री ने आर्य समाज में राष्ट्रीय स्तर पर संगठन को मजबूत बनाने हेतु विचार रखे।समापन के अवसर पर डा. शास्त्री ने आमंत्रित सभी संतो व विद्वानों को धन्यवाद देते हुए भावभीनी बिदाई दी।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।